अनुवाद

हे पार्थ! सब प्राणियों का आदि बीज मुझे ही जान। बुद्धिमानों की बुद्धि और तेजस्वियों का तेज भी मैं ही हूँ।।१०।।

तात्पर्य

बीजम् का अर्थ कारण है। श्रीकृष्ण सबके बीज हैं। भौतिक प्रकृति के संग में बीज चराचर नाना जीव योनियों के रूप में फलित होता है। पशु, पक्षी, मनुष्य आदि चर जीव हैं, जबकि वृक्ष, तरु आदि अचर हैं। जीवमात्र की चराचर ८४,००,००० योनियाँ हैं। इन सब के जीवन के बीज श्रीकृष्ण हैं। वैदिक शास्त्रों में उल्लेख है कि ब्रह्म सम्पूर्ण पदार्थों का उद्गम है। श्रीकृष्ण परब्रह्म हैं; ब्रह्म निर्विशेष तत्त्व है, जबकि परब्रह्म सविशेष-साकार हैं। भगवद्गीता के अनुसार निर्विशेष ब्रह्म साकार परब्रह्म के आश्रय में स्थित है। अतः मूल रूप से श्रीकृष्ण ही सबके उद्गम हैं। जिस प्रकार जड़ पूरे वृक्ष का परिपालन करती है, उसी भाँति सम्पूर्ण पदार्थों के आदि कारण श्रीकृष्ण इस सृष्टि के सम्पूर्ण योगक्षेम का वहन करते हैं। वैदिक शास्त्रों द्वारा यह प्रमाणित है: **यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते।** 'परमसत्य वह है जिससे सब कुछ उत्पन्न हुआ है।' वे नित्य तत्त्वों में परम नित्य हैं, चेतनाधारियों में परम चैतन्य हैं और सम्पूर्ण जीवन के पोषक हैं। श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा है कि वे सम्पूर्ण बुद्धि-शक्ति के स्रोत हैं। अतएव एकमात्र बुद्धिमान् मनुष्य ही भगवान् श्रीकृष्ण को जान सकता है।

बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ।।११।।

बलम्=पराक्रम; **बलवताम्**=बलवानों का; **च**=तथा; **अहम्**=मैं हूँ; **काम**=काम; **राग**=आसक्ति; **विवर्जितम्**=शून्य; **धर्म अविरुद्धः**=धर्म के अनुकूल; **भूतेषु**=जीवों में; **कामः**=मैथुन; **अस्मि**=मैं हूँ; **भरतर्षभ**=हे भरतवंशियों के नाथ (अर्जुन)।

अनुवाद

मैं बलवानों का कामना और आसक्ति से रहित बल हूँ। और हे अर्जुन! जीवों में धर्मसम्मत काम भी मैं ही हूँ।।११।।

तात्पर्य

बलवान् अपने बल का उपयोग निर्बल की रक्षा के लिए ही करे, स्वार्थप्रेरित आक्रमण के लिए नहीं। इसी भाँति, धर्मसम्मत मैथुन का उद्देश्य केवल संतति करना हो, विषयसुख नहीं। अपनी सन्तान को कृष्णभावनाभावित बनाना माता-पिता का परम कर्तव्य है।

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये।
मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि।।१२।।